सहमत मुक्तनाद

वर्ष:5 अंक: 1-3 जनवरी-मार्च 2003

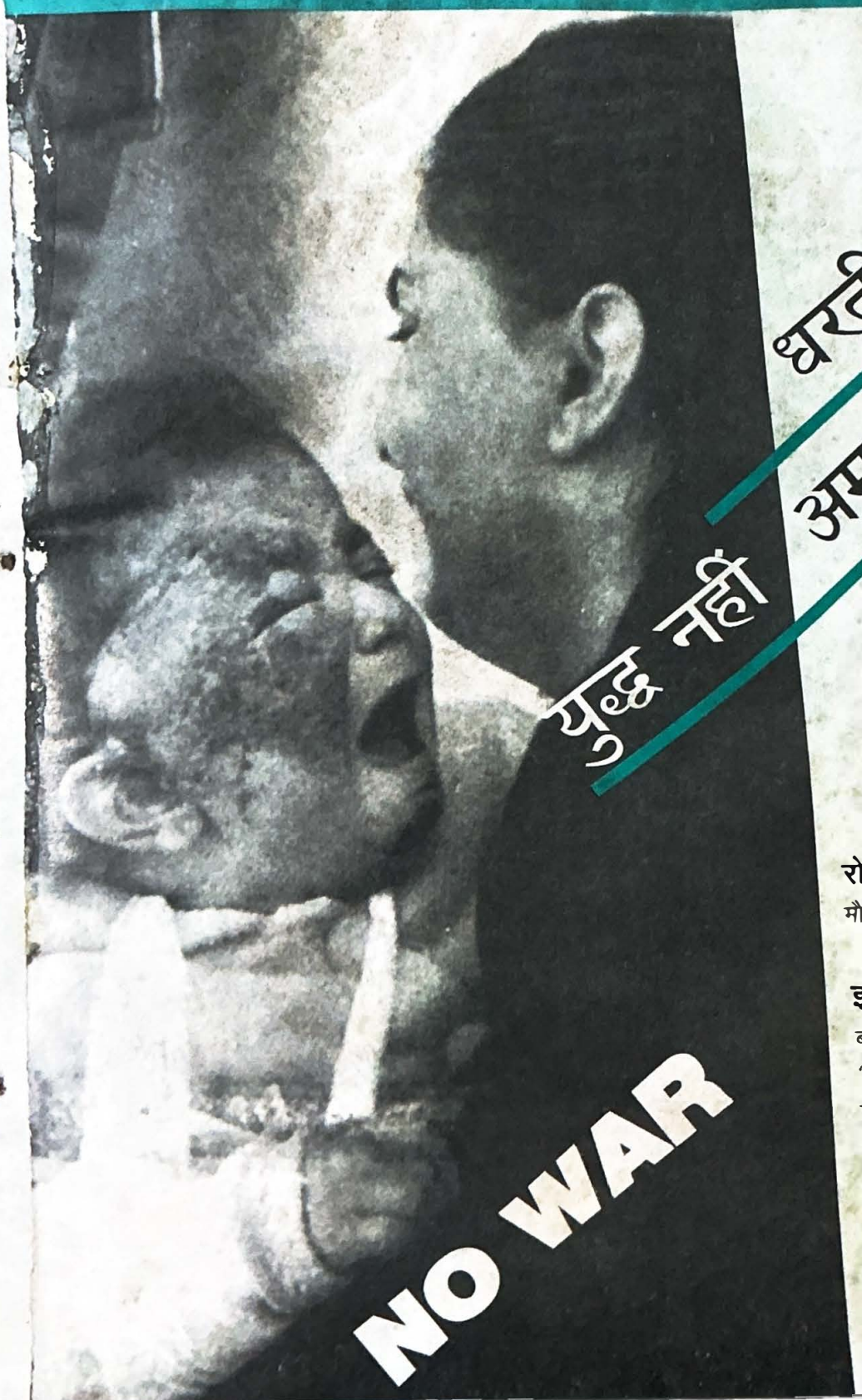

धरती को अमन चाहिए

रोमिला थापर
मौजूदा हालात पर कुछ विचार

इरफान हबीब
बाबरी मस्जिद के ध्वंस के लिए 'इतिहास' के तर्क: एक भोंडे फर्जीवाड़े की शव-परीक्षा

एजाज़ अहमद
इराक के खिलाफ युद्ध: अमरीका का खेल और बाकी दुनिया की मिलीभगत

सहमत मुक्तनाद

वर्ष: 5 अंक: 1 - 3

जनवरी - मार्च 2003

यह अंक 35 रु.

वार्षिक सदस्यता 150 रु.

संरक्षक मण्डल:

भीष्म साहनी

इरफान हबीब

सुवीरा जायसवाल

हबीब तनवीर

संपादन:

राजेन्द्र शर्मा

संपादकीय व प्रबन्ध कार्यालय:

सहमत

8 विट्ठलभाई पटेल हाऊस

रफी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001

फोन: 23711276, 23351424

संपादन और प्रकाशन पूर्णत: अवैतनिक टिप्पणियों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिनसे संपादक/प्रकाशक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

सारे भुगतान चैक या बैंक ड्राफ्ट से **सहमत** के नाम से किए जाएं।

अनुक्रम

1 **संपादकीय**
साम्राज्य की वापसी

5 **एजाज़ अहमद**
इराक के खिलाफ युद्ध:
अमरीका का खेल और
बाकी दुनिया की मिलीभगत

11 **राबर्ट फिस्क**
'सद्दाम हिटलर है और यह लड़ाई
तेल के लिए नहीं है': युद्ध के लिए
अमरीका का दुहरा झूठ

15 **जवरीमल्ल पारख**
अमरीका, युद्ध विरोध और
मीडिया

21 **जयति घोष**
युद्धविरोधी प्रदर्शनों की लहर
अर्थ और महत्व

23 **अरुंधति राय**
साम्राज्य से संघर्ष

25 **प्रभाष जोशी**
विश्व समाज सम्मेलन आ रहा है

27 **शैलेंद्र चौहान**
दुनिया बदलने की तमन्ना

30 **श्रीकांत मिश्र**
भूमंडलीकरण: एक अभिशाप

35 **इरफान हबीब**
बाबरी मस्जिद के ध्वंस के लिए
'इतिहास' के तर्क: एक भोंडे
फर्जीवाड़े की शव-परीक्षा

39 **रोमिला थापर**
मौजूदा हालात पर कुछ विचार

44 **अरविंद मोहन**
धुंधलके से अंधियारे की ओर

47 **रामसुजान अमर**
धर्मनिरपेक्षता के संघर्ष की
समस्याए

53 **असद जैदी**
दस बरस: कुछ शब्द

55 **राघव**
नकारात्मक शिक्षक के सबक

58 **राजेंद्र शर्मा**
गोधरा/गुजरात के साल भर बाद

62 **अनिल नौरिया**
सावरकर की तस्वीर के पीछे

64 **सुभाष चद्र**
गौ प्रेम की राजनीतिक आकांक्षा

67 **प्रभात पटनायक**
एक विकास विरोधी बजट

71 **डॉ चक्रपाल सिंह**
कृषि आयकर: मिथक और यथार्थ

संपादकीय

साम्राज्य की वापसी

साम्राज्य की वापसी हो रही है। वही खून से तर-बतर पोशाक। वही दूर से ही चमकती तलवार का झंडा। वही, कमजोर पर ताकत दिखाने की क्रूर लालसा। वही, सुरक्षित लूट के लिए सीधे अपने कब्जे में रखने पर भरोसा। वही, अपने लिए बाकी सब से उच्चतर भूमिका का दावा और दूसरों से भिन्न पैमानों से जांचे जाने की मांग। संक्षेप में अपने पुराने रूप में साम्राज्य की वापसी। यहां तक कि उसकी भाषा भी ज्यों की त्यों लौट रही है। इराक पर आंग्ल-अमरीकी फौजों का हमला शुरू होने के बाद से जार्ज बुश के संबोधनों में एक बीज शब्द की तरह आता है "दायित्व"। दायित्व, अमरीकियों की आने वाली पीढ़ियों के प्रति। दायित्व, शेष दुनिया के प्रति। दायित्व, इराकी जनता के प्रति। बगदाद पर मिसाइलों व बमों से सैकड़ों टन विस्फोटक बरसाने के साथ, आखिरकार 20 मार्च को शुरू हुए बुश-ब्लेयर जोड़ी तथा उनके सहयोगियों के हमले को, "ऑपरेशन इराकी फ्रीडम" का नाम ऐसे ही नहीं दे दिया गया। इसके पीछे साम्राज्यवाद की पूरी विचारधारा है। साम्राज्यवाद के विरुद गायक किपलिंग ने "गोरों के बोझ" की कल्पना, ठीक ऐसे ही दायित्वों के संबंध में की थी। बाकी सारी दुनिया को "सभ्य" बनाना, एक बोझ ही तो था जो उन्हें उठाना था। बेशक, उनके हिसाब से बाकी सब का भी इतना कर्तव्य तो बनता ही है कि इस बोझ को उठाने में, उनकी मदद करें! वास्तव में किपलिंग ने पूरबवालों को इसकी खूब सीख दी थी। जाहिर है कि इस सब में इस सवाल की कोई गुंजाइश नहीं थी कि जिसे सभ्यता कहा जा रहा है, उसे सभ्यता कहने का आधार क्या है? और इस तरह के किसी सवाल की तो गुंजाइश हो ही कैसे सकती थी कि जिन्हें इस तरह सभ्य बनाया जा रहा है, इस तरह के सभ्य बनना भी चाहते हैं या नहीं? अचरज नहीं कि आज भी यह तय करने का "फ्रीडम" अमरीका तथा उसके सहयोगियों के पास ही है कि इराक और इराकियों की स्वतंत्रता किस चीज में है। और फिलहाल यह तो तय किया ही जा चुका है कि इराकियों की स्वतंत्रता, हर कीमत पर सद्दाम हुसैन के सत्ता से हटाए जाने में है।

अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि सद्दाम हुसैन के जिन रसायनिक हथियारों के खतरे से समूची मानवता और यहां तक कि खुद इराकियों को भी बचाने की चिंता का इतना शोर था, उनका इराकी निजाम लड़ाई में बहुत ही नाजुक मुकाम पर पहुंचकर भी उपयोग नहीं कर पाया था। इस तरह जिन हथियारों से दूसरे देशों के लिए गंभीर खतरा पैदा होने के दावे किए जा रहे थे, खुद इराकी निजाम के गंभीर खतरे में पड़ने पर भी उपयोग में लाए जाने की स्थिति में नहीं थे! और इससे तो खैर उन्हें फर्क ही क्या पड़ सकता है कि ठीक उन्हीं हथियारों का सद्दाम हुसैन ने सचमुच जब उपयोग किया था और खुद अपने देश में कुर्द विद्रोहियों के खिलाफ और ईरान के खिलाफ युद्ध में भी उपयोग किया बताते हैं, उस जमाने में इराकियों की 'स्वतंत्रता' सद्दाम हुसैन के शासन के खात्मे में हर्गिज नहीं थी। तब तो इराकी जनता की स्वतंत्रता, सद्दाम हुसैन के निजाम के मजबूत होने में ही थी और इसीलिए उसे अमरीका के प्रिय सहयोगियों में गिना जाता रहा था। वास्तव में इसी के ईनाम के तौर पर तो उसे आंग्ल-अमरीकी धुरी ने रसायनिक व जैव शस्त्रों से लैस किया था। यहां तक कि इराकी जनता की स्वतंत्रता के लिए सद्दाम का हटना तब भी जरूरी नहीं माना गया था, जब अस्सी के दशक में वर्षों तक चले पूरी तरह से निरर्थक और सत्यानाशी ईरान-इराक युद्ध में, सीमा के दोनों पार लाशों के अंबार लग गए थे। लेकिन, तब तो उन्हें शायद ज्यादा चिंता ईरान की जनता की स्वतंत्रता की थी और उसके लिए शाह के निजाम को जनविद्रोह के जरिए उखाड़कर आए अयातुल्ला खोमैनी के निजाम से मुक्ति जरूरी समझी जा रही थी! वह निजाम आंग्ल-अमरीकी धुरी का कट्टरविरोधी जो था। अचरज नहीं कि वर्षों चले इस निरर्थक युद्ध में सद्दाम हुसैन को इन स्वतंत्रता के मसीहाओं से सैनिक मदद मिलती रही थी। यह दूसरी बात है कि इस मामले में अपने समदर्शीपन का सबूत देते हुए, अमरीका ने ईरान और इराक दोनों को ही एक-दूसरे के संबंधित सैन्य खुफिया जानकारियां पहुंचायी थीं, ताकि लड़ाई की आंच धीमी न होने पाए और दूसरे देशों में स्वतंत्रता का प्रसार करने का उसका कारोबार बराबर फलता-फूलता रहे।

लेकिन, इस का आशय यह कतई नहीं है कि साम्राज्य में कुछ भी नया नहीं है। और तो और, बुश सीनियर के नेतृत्व में 1991 में चलाए गए पिछले खाड़ी युद्ध और 2003 में अब बुश जूनियर के आंग्ल-अमरीकी युद्ध के बीच में भी, बहुत कुछ बदल चुका है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है, बुश प्रशासन तथा उसके टोनी ब्लेयर के इंग्लेंड जैसे घनिष्ठ सहयोगियों का, इराक के खिलाफ अपनी मुहिम के लिए किसी विश्वसनीय बहाने तक का मोहताज न रह जाना। यह अकारण ही नहीं है कि आज जितने बड़े पैमाने पर और जितने बलपूर्वक विश्व जनमत इराक पर अमरीकी-ब्रिटिश हमले पर अपना विरोध दर्ज करा रहा है, इससे पहले कभी देखने में नहीं आया था। साठ के दशक के उत्तरार्द्ध और सत्तर के दशक के पूर्वार्द्ध के वियतनाम युद्धविरोधी ज्वार में भी